

## वलिप्तके कगार पर केरल की छह नदियाँ

### संदर्भ

क्या केंद्रीय त्वावणकोर शीघ्र ही नदियों और प्राकृतिक जलधाराओं से रहति स्थान बन जाएगा? हालाँकि यह प्रश्न वचिरणीय हो सकता है परन्तु वास्तविकता यही है कि वैज्ञानिकों द्वारा किये गए एक अध्ययन से इस बात का खुलासा हुआ है कि त्वावणकोर की 6 नदियाँ वलिप्तके कगार पर हैं।

### महत्त्वपूर्ण तथ्य

- दरअसल, पम्पा (Pampa) नदी प्रणाली की वर्तमान स्थितिको देखते हुए यह अनुमान लगाया गया है कि यदि इसकी यही स्थिति बनी रही तो यह अगले 55 वर्षों में पूरगत: वलिप्त हो जाएगी।
- इसके अलावा अचेनकोइल (Achencoil) के अगले 15 वर्षों, मणमिला (Manimala) के 20 वर्षों, मीनाचलि (Meenachil) के अगले 45 वर्षों, मुवात्तुपुझा (Muvattupuzha) के 20 वर्षों और चलाकुडी (Chalakydy) आदि नदियों के अगले 15 से 20 वर्षों में पूरगत: वलिप्त होने की संभावना बताई गई है।
- ये नदी प्रणालियाँ पतानमतट्टिटा (Pathanamthitta), कोट्टायम (Kottayam) और अलापुझा (Alappuzha) क्षेत्र में हैं।
- वर्ष 1940-1980 के दौरान नदियों के अपवाह क्षेत्रों में अत्यधिक वनोंमुलन के परणामस्वरूप इन नदी प्रणालियों की कई सहायक नदियाँ सूख चुकी हैं जिससे इनका नयिमति प्रवाह (मुख्यतः गर्मी के दिनों में) प्रभावति हुआ है।
- कोझनचेरी (Kozhencherry) का ऊपरी समतल भाग पम्पा की नदी प्रणाली की अधोगतकी ओर संकेत करता है।
- जल के तलों में आई एकाएक कमी के कारण नदियों पर बने पुलों और जल पम्पिंग स्टेशनों की वर्तमान स्थितिकाफी खराब है।

### त्वावणकोर में नदियों के वलिप्तकिरण के लयि ज़मिमेदार कारक

- नदियों के अपवाह क्षेत्र में वनों का गरिना।
- अवैज्ञानिक मृदा खनन।
- सहायक नदियों का क्षरण।
- कूड़े के कारण होने वाला प्रदूषण।
- वधि, डायनामाइट आदि का उपयोग कर अवैध तरीके से मछली पकड़ना।
- शहरीकरण।
- नदियों के तलों की जलग्रहण क्षमता में कमी।
- शहरीकरण के दौरान किये जाने वाले भूमि रूपांतरण से भी नदियों में जाने वाली कई प्राकृतिक जलधाराओं का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। मृदा के जमाव के अभाव में नदियों के तलों की जलग्रहण क्षमता नष्ट हो जाती है, जिस कारण वर्षा होने पर जो पानी नदियों में समाहित होता है उसका प्रवाह आगे की ओर हो जाता है।

### नषिकर्ष

पम्पा, अचेनकोइल (Achencoil), मणमिला और मीनाचलि नदियों के लयि एक एकीकृत कार्य योजना की आवश्यकता पर बल दिया गया है। ध्यातव्य है कि ये सभी नदियाँ वेमबनाड झील में जाकर मलित्ती हैं। पम्पा और अचेनकोइल को केंद्रीय त्वावणकोर की जीवनरेखाओं के रूप में संदर्भति कयिा जाता है। इनकी मौजूदा स्थितिका कारण पर्यावरण और नदी संरक्षण के प्रतामिनुष्यों का असंवेदनशील होना ही है।